﴾ फ़िर्क़ावारियत से बचकर मुर्शिदी कामिल,इमाम-उल-अंबियां वल मुर्सलीन सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ को "वाक़ई अपने बुज़ुर्गों से" ज़्यादा अहमियत देने वालों के लिए ﴿

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله واصحابه اجمعين الى يوم الدين

12
ربیع الاول
1433ھ

Research Paper 1

रसूलुल्लाह ﷺ की आख़िरी वसिय्यतें

5
February
2012

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद **अपनी मौत से पहलें पहलें** सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर **लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!**

اللہ ﷻ की वहीह से मुताल्लिक़ आख़िरी वसिय्यतें

اللہ ﷻ के महबूब, हमारें निहायत ही शफीक़ आक़ा, इमामे आज़म, इमामे क़ाईनात सय्यिदुल अव्वलीन वल आखिरीन,इमामुल अंबिया वल मुर्सलीन, शफ़िउल मुज्नबीन, रहमतुल लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी वफ़ात के बाद अपनी उम्मत को اللہ ﷻ की **वहीह (क़ुरआन और सहीह अहादीस)** के साथ ताल्लुक़ मज़बूत बनाने की वसिय्यत फ़रमाई। चुनाँचे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (अपनी वफ़ात से 3 माह पहले) हज्जतुल विदाअ के मौके पर इर्शाद फ़रमाया:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक मैं अपने बाद तुम मे दो ऐसी अज़ीम चीज़े छोड़ कर जा रहा हुँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह नहीं होंगे | Ⅰ اللہ ﷻ की किताब और Ⅱ उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सही अहादीस से माख़ूज़ हों।)" (अल मोत्ता लिल मालिक "किताबुल क़द्र" हदीस न0 1628, अलमुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न0 318)

[الموطأ للمالك "كتابُ القدر" حديث نمبر 1628 ، المُستدرك لِلحاكم "كتابُ العلم" حديث نمبر 318]

नोट : اللہ ﷻ ने उलेमा और दर्वेशों की तालीमात के बजाए अपनी **वहीह (क़ुरआन और उसकी तफ़सीर यानी सहीह अहादीस)** की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुद ली है:

(सूराहतुल हिज्र आयत न0 9) [سورة الحجر، آیت نمبر 9]

नोट : (इज्माअ-ए-उम्मत को हुज्जत मानना दरअसल क़ुरआन व सहीह अहादीस का हुक्म मानने में ही दाख़िल है।

(अन्निसा: 115), (अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न0 399) [النساء : 115] ، [المُستدرك لِلحاكم "كتابُ العلم" حديث نمبر 399]

अगर क़ुरआन व सुन्नत (सहीह हदीस) और इज्माअ-ए-उम्मत की मुख़ालफ़त ना आए तो (क़यास या इज्तिहाद) करना जाइज़ है

(अल मुसन्नफ़ लिइब्ने अबी शैबह, "किताबुल बुयू", हदीस न0 22990) [المُصنف لابن ابی شیبة "كتابُ البيوع" حديث نمبر 22,990]

सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ (अपनी वफ़ात से 03 माह पहले हज्जतुल विदाअ के मौके से वापसी पर) (गदीरे ख़ुम) के मुक़ाम पर ख़ुतबा देते हुए इर्शाद फ़रमाया:

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "ऐ लोगों आगाह हो जाओ! मैं भी इन्सान हूँ क़रीब है कि मेरे पास मेरे रब का क़ासिद(मौत का फ़रिश्ता) आए और मैं उसकी बात क़ुबूल कर लूँ। मैं अपने बाद तुम में दो अज़ीम चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ। Ⅰ पहली चीज़ तो اللہ ﷻ की किताब है इसमें हिदायत और नूर है, तुम اللہ ﷻ की किताब को पकड़ो और उसी से ताल्लुक़ मज़्बूत करो اللہ ﷻ की किताब اللہ ﷻ की रस्सी है, जिसने उसकी इत्तिबा की वह हिदायत पर है और जिसने उसे छोड़ दिया वह गुमराह हो गया। Ⅱ और दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत है मैं अपने अहले बैत के मुताल्लिक़ तुम्हें اللہ ﷻ से डराता हुँ। अपने अहले बैत के मुताल्लिक़ तुम्हें اللہ ﷻ से डराता हुँ। (उनसे अच्छा बर्ताव करना)

(सहीह मुस्लिम "किताबुल फ़ज़ाइल" हदीस न0 6228) [صحيح مُسلم "كتابُ الفضائل" حديث نمبر 6228]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना तलहा ؓ का बयान है कि मैंने सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा ؓ से पूछा: क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी को अपना वसी (वसिय्यत किया गया ख़लीफ़ा)बनाया था? उन्होंने कहा: "नहीं...." "(मगर) रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें اللہ ﷻ की किताब पर अमल करते रहने की वसिय्यत फ़रमाई थी"

(सहीह बुख़ारी "किताबुल मग़ाज़ी"हदीस न0 4460) [صحيح بُخارى "كتابُ المغازى" حديث نمبر 4460]

"क़ब्रों" से मुताल्लिक़ आख़िरी अहम वसिय्यतें

اللہ ﷻ के महबूब सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ से इसी ज़िम्न में 10- सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना आयशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ मर्जे वफ़ात में मुब्तला थे तो बार-बार अपनी चादर को अपने चेहरे मुबारक पर डालते और जब चादर की वजह से घबराहट शुरु हो जाती तो उसे अपने चेहरे मुबारक से हटा लेते और इसी हाल में फ़रमाते जाते थे:

﴿ لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى، اِتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ ﴾

(**तर्जुमा :** اللہ ﷻ की लाअनत हो यहूदियों और नस्रानियों (ईसाईयों) पर कि उन्होंने अपने अंबिया علیہم السلام की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था।) फिर सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं "अगर यह ख़ौफ़ ना होता कि रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र पर लोग सज्दे शुरु कर देंगे तो आप ﷺ की क़ब्र मुबारक को (ज़ाइरीन की ज़ियारत के लिये) ख़ुला छोड़ दिया जाता मगर आप ﷺ को यही ख़ौफ़ था जिसकी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ इस अ़मल से बचने की तलक़ीन कर रहे थे" |

(सहीह बुख़ारी, "किताबुल जनाइज़" हदीस 1390 सहीह मुस्लिम "किताबुल मसाजिद" हदीस न01183) [صحيح بُخارى "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 1390 ، صحيح مُسلم "كتابُ المساجد" حديث نمبر 1183]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना जुन्दब ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी वफ़ात से 5 दिन क़ब्ल इर्शाद फ़रमाया: "ख़बरदार! तुम से पहले लोग अपने अन्बिया علیہم السلام और नेक लोगों की कब्रों को सज्दागाह बना लेते थे। "ख़बरदार! तुम लोग क़ब्रों को सज्दागाह मत बनाना बेशक मैं तुम्हें इस हरकत से मना करता हूँ।"

(सहीह मुस्लिम "किताबुल मसाजिद" हदीस न0 1188) [صحيح مُسلم "كتابُ المساجد" حديث نمبر 1188]

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (اللہ ﷻ के हुज़ूर दुआ करते हुए) अर्ज किया: "ऐ اللہ ﷻ मेरी कब्र को ऐसा (बुत) ना बना देना कि उसे पूजा जाने लगे। اللہ ﷻ की लाअनत हो उन लोगों पर जिन्होंने अपने अंबिया علیہم السلام की कब्रों को सज्दागाह बना लिया था"।

(मुस्नद इमाम अहमद, मुस्नद अबी हुरैरह ؓ हदीस न0 7352) [مُسندِ امام احمد " مُسند ابی هريره ؓ" حديث نمبر 7352]

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ रिवायत करते हैं: "मना फ़रमाया है रसूलुल्लाह ﷺ ने Ⅰ कब्रों को पक्का करने से और Ⅱ इन पर इमारत बनाने से और Ⅲ इन पर बैठने से (चाहे वैसे ही बैठना हो, चाहे मुजाविर बनके)और Ⅳ इन पर ज़िखने, (कुतबा लगाने) से।"

﴾ **नोट :** आख़िरी जुम्ला नंबर IV "जामे तिर्मिज़ी"में मोजूद हैं ﴿ (सहीह मुस्लिम "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 2245, जामे तिर्मिज़ी "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 1052) [صحيح مُسلم "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 2245 ، جامع ترمذی "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 1052]

नोट : अपने किसी अज़ीज़ की क़ब्र की निशानदेही के लिये उसकी कब्र के सरहाने ﴾ पथ्तर से निशानी ﴿ रख़ना रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत-ए-मुबारका है।

(सुनन अबी दाऊद "किताबुल जनाइज़"हदीस न0 3206) [سُنن ابی داؤد "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 3206]

❺ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू मरसद गनवी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: "क़ब्रों पर मत बैठो और ना ही उन की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ो।"

(सहीह मुस्लिम "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 2250) [صحيح مُسلم "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 2250]

❻ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ (यानी उनमें नवाफ़िल

❷ पढ़ने का एहतमाम किया करो) और मेरी क़ब्र को मेलागाह ना बना लेना, और मुझ पर दरुद भेजो, तुम जहाँ कहीं भी हो तुम्हारा दरुद मुझ तक पहुँचा दिया जाता है"।

(सुनन अबी दाऊद "किताबुल मनासिक" हदीस न0 2042) [سُنن ابی داؤد "کتابُ المناسک" حدیث نمبر 2042]

❼ **तर्ज़ुमा सहीह हदीस:** मशहूर ताबई सुमामा बिन शफ़ी رحمہ اللہ रिवायत करते हैं कि हम सय्यिदना फ़ुजाला बिन उबैद ؓ के हमराह रुम के शहर (रोड्स) में कयाम पज़ीर थे।उसी दौरान हमारा एक साथी वफ़ात पा गया तो सय्यिदना फ़ुज़ाला बिन उबैद ؓ के हुक्म से उसकी क़ब्र को ज़मीन के बराबर बनाया गया। सय्यिदना फ़ुज़ाला बिन उबैद ؓ ने फ़रमाया कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है की आप ﷺ क़ब्रों को ज़मीन के बराबर बनाने का हक्म दिया करते थे।"

(सहीह मुस्लिम किताबुल जनाइज हदीस न0 2242) [صحیح مُسلم "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 2242]

❽ **तर्ज़ुमा सहीह हदीस:** अबु हय्याज असदी رحمہ اللہ कहते हैं कि सय्यिदना अली ؓ ने मुझ से फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उस काम के लिये ना भेजूँ जिस काम के लिये मुझे ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ ने मामूर फ़रमाया था और वह यह कि तुम हर तस्वीर को मिटा दो और हर ऊँची क़ब्र को ज़मीन के बराबर कर दो।"

(सहीह मुस्लिम "किताबुल जनाइज" हदीस न0 2243) [صحیح مُسلم "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 2243]

नोट : सय्यिदना फ़ुज़ाला बिन उबैद ؓ के हुक्म से किसी काफ़िर की नहीं बल्कि (एक मुजाहिद ताबई) की क़ब्र को ज़मीन के बराबर बनाया गया और यूँ एक सहाबी ؓ के फ़हम से वाज़ेह हुआ कि क़ब्र को ज़मीन के बराबर बनाना दुरुस्त है अल्बत्ता शरीअत में क़ब्र को (ऊँट की कोहान) के बराबर (क़रीबन एक बालिश्त) ऊँचा रख़ने की इजाज़त भी मौजूद है:

(सहीह बुख़ारी,"किताबुल जनाइज़"हदीस न0 1390) [صحیح بُخاری "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 1390]

यहूदो नसारा का "तर्ज़-ए-अमल" और उम्मत-ए-मुहम्मदिया ﷺ

اللہ ﷻ के महबूब ﷺ ने बहुत पहले ही हमें (ख़तरनाक तर्ज़-ए-अमल) से आगाह फ़रमा दिया था चुनाँचे:

❾ **तर्ज़ुमा सहीह हदीस:** सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि एक दफ़ाअ उम्महातुल मौमिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا और सय्यिदा उम्म हबीबा رضی اللہ عنہا ने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने एक गिरजे का ज़िक्र किया जो उन्होंने सर ज़मीने हब्शा में देखा था और उसे (मारिया) कहा जाता था, और उन्होंने उस गिरजे में लटकी हुई कुछ तस्वीरों का ज़िक्र भी रसूलुल्लाह ﷺ के सामने किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ये लोग ऐसे थे कि जब उन में से कोई नेक आदमी मर जाता तो वे उसकी क़ब्र पर मस्जिद बना लेते और फिर उसमें उसकी तस्वीरें लटका देते, क़यामत के दिन ये लोग اللہ ﷻ के नज़्दीक बदतरीन मख़्लूक़ शुमार होंगे।"

(सहीह बुख़ारी "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 1341, सही मुस्लिम "किताबुल मसाजिद"1180) [صحیح بُخاری "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 1341، صحیح مُسلم "کتابُ المساجد" حدیث نمبر 1180]

❿ **तर्ज़ुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : "यक़ीनन तुम भी पहले लोगों के तरीकों के पीछे चल पड़ोगे जिस तरह बालिश्त-बालिश्त के साथ और हाथ, हाथ के साथ (बराबर होता है) हत्ता कि अगर पहले लोगों ने किसी गोह के सुराख़ में दाख़िल होने का (बिल्कुल फ़ुज़ूल) काम किया तो तुम भी उनके पीछे चलोगे।"पूछा गया या रसूलुल्लाह ﷺ उन पहले लोगो से मुराद क्या यहूदी और नस्रानी (ईसाई) हैं ? तो आप रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अगर वह मुराद नहीं तो और कौन मुराद हैं ?

(सहीह बुख़ारी, "किताबुल एतसाम बिल किताब वस्सुन्नह" हदीस न0 7320, सही मुस्लिम, "किताबुल इल्म" हदीस न0 6781) [صحیح بُخاری "کتابُ الاعتصام بالکتاب والسنة" حدیث نمبر 7320 ، صحیح مُسلم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 6781]

नोट : उम्मत-ए-मुहम्मदिया ﷺ की मौजूदा हालत देखने के बाद मुन्दर्जा बाला (उपर लिखी) अहादीस के 100 फीसद सच्चे होने का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। ﴿نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ ذٰلِکَ﴾ (नऊज़ु बिल्लाह मिन ज़ालिक)

सहीह अहादीस पढ़ने का "फ़ितरी नतीजा"

मुन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) सहीह अहादीस की रोशनी में एक बहुत बड़ी इल्मी शख़्सियत जिनको बर्रे सग़ीर पाको-हिन्द में﴿अहले सुन्नत﴾का दावा करने वाले तीनों मसालिक Ⅰ बरेल्वी, Ⅱ देओबंदी, और Ⅲ सलफी (अहले हदीस)अपना बुर्ज़ुग मानते हैं। यानी सय्यिद महमूद आलूसी, बग़दादी رحمہ اللہ (अल मुतवफ्फा1270हि0) लिखते हैं:

★ **उर्दू में तर्ज़ुमा:** "इस बात पर इज्मा-ए-उम्मत है कि सब से बड़ा हराम और शिर्क के अस्बाब की चीज़ो में से मज़ारों के पास नमाज़ पढ़ना और उन पर मस्जिदें या इमारते बनाना है। ऐसी तमाम चीज़ों को और क़ब्रों पर बनाए गए गुम्बदों को गिराना वाजिब है। क्योंकि यह मस्जिदे ज़रार (जिसे गिराने का हुक्म ख़ुद اللہ ﷻ ने क़ुरआन में दिया था) से भी ज़्यादा नुक़्सान देह हैं। इसलिये कि उनकी बुनियादें रसूलुल्लाह ﷺ की मुख़ालफ़त पर रखी गई हैं। और क़ब्रों पर हर क़न्दील और हर चिराग़ बुझा देना भी वाजिब है। और कोई जवाज़ (गुंजाइश) मौजूद नहीं है उनके वक़्फ़ करने और नज़्रे मानने का।" ("तफ़्सीर रुहुल मआनी"हवाला: 238/15 मक्तबा इम्दादिया, मुल्तान)

["تفسیر روحُ المعانی" حوالہ: 15 / 238 ، مکتبہ امدادیہ ، ملتان]

मस्जिदे नबवी ﷺ और "गुम्बदे ख़िज़रा" का मसअला

रसूलुल्लाह ﷺ की तालीमात का मज़ाक़ उड़ाते हुए बाज़ गुस्ताख़ उलेमा और गुस्ताख़ अवाम मस्जिदे नबवी ﷺ और गुम्बदे ख़िज़रा की मिसाल देकर रसूलुल्लाह ﷺ की मुख़ालफ़त पर बनाए गए इन मज़ारात और उन क़ब्रों पर बनी मस्जिदों का झूठा दिफ़ाअ(बचाव) करते हैं।लिहाज़ा यहाँ अशद(बहुत) ज़रुरी है कि इस मसअले की हक़ीक़त और तारीख़ भी बयान कर दी जाए। जहाँ तक मस्जिदे नबवी ﷺ का मसअला है तो वह रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र-ए-मुबारक पर नहीं बनाई गई। और ना ही रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र-ए-मुबारक मस्जिदे नबवी ﷺ पर बनाई गई थी बल्कि क़ब्र-ए-मुबारक तो हुजरा-ए-आयशा رضی اللہ عنہا में बनाई गई थी। क्योंकि सहीह हदीस के मुताबिक़ हर नबी ؑ को उसकी वफ़ात के मुक़ाम पर ही दफ़न किया जाता है।

(जामे तिर्मिज़ी, "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 1018) [جامع ترمذی "کتابُ الجنائز" حدیث نمبر 1018]

रहा गुम्बदे ख़िज़रा का मसला तो हक़ीक़त यह है कि गुम्बद बनाने की टेक्नोलोजी क़ब्ल अज़ मसीह ؑ होने के बावजूद पहले 650 साल के मुसलमानों ने रसूलुल्लाह की क़ब्र-ए-मुबारक पर गुम्बद बनाने की जुर्रत नहीं की। क्योंकि उन्हे रसूलुल्लाह ﷺ की दर्जनो सहीह अहादीस ने रोक रखा था। इस ज़िम्न में मशहूर मुसलमान मोर्रिख़ (इतिहासकार) अल्लामा नूरुद्दीन अली इब्ने अहमद समूदी رحمہ اللہ(अल मुतवफ़्फ़ी 911हि0) लिखते हैं: 678 हिजरी में (रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात के 667 साल बाद) बादशाहे मिस्र मन्सूर बिन क़लादून सालिही ने कमाल अहमद बिन बुरहान के मश्वरे से लकड़ी का गुम्बद बनवाया और उसे हुजरा-ए-आयशा رضی اللہ عنہا की छत पर लगा दिया और उसका नाम﴿क़ुबा रज़्ज़ाक़﴾पड़ गया। उस वक़्त के उलेमा हर चंद (कोशिश के बावजूद) उस साहिबे इक़्तदार को रोक ना सके मगर उन्होंने इस काम को बहुत ही बुरा ख़्याल किया हत्ता कि जब इस काम का मशवरा देने वाले कमाल अहमद बिन बुरहान को माज़ूल कर दिया (हटा दिया) गया तो लोगों ने उसकी माज़ूली को اللہ ﷻ की तरफ़ से उसके इस फ़अल (काम) की सज़ा शुमार किया"।

("वफ़ाउल वफ़ा"जिल्द न0 1, सफ़्हा न0 435) ["وفاء الوفا" جلد نمبر 1 ، صفحہ نمبر 435]

नोट : अब ज़रा मदीना शरीफ़ मे बिदअ़त जारी करने वाले के अन्जाम से मुताल्लिक़ सय्यिदना अली ؓ और सय्यिदना अनस बिन मालिक ؓ की रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करदा (वईद) मुलाहिज़ा फ़रमाऐं:

★ **तर्ज़ुमा सहीह हदीस:** "मदीना हरम है फ़लाँ जगह से फ़लाँ तक। इस हद में कोई दरख़्त ना उखाड़ा जाए और ना ही कोई बिदअत जारी की जाए। जिसने यहाँ कोई भी बिदअत निकाली उस पर اللہ ﷻ की लाअनत, तमाम फ़रिशतों की लाअनत, और तमाम इन्सानों की लाअनत।और क़यामत के दिन اللہ ﷻ ना तो उसका कोई फ़र्ज क़ुबूल करेगा और ना ही कोई नफ़िल क़ुबूल करेगा।"

(सहीह बुख़ारी "किताब फ़ज़ाइले मदीना"हदीस न0 1867, सहीह मुस्लिम, "किताबुल हज"हदीस न0 3324)

[صحیح بُخاری "کتاب فضائل مدینہ" حدیث نمبر 1867 ، صحیح مُسلم "کتابُ الحج" حدیث نمبر 3324]

सर ज़मीन-ए-अरब से "मज़ारात का ख़ात्मा"

सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (ज़माना-ए-क़ुर्बे कयामत से मुताल्लिक़) इर्शाद फ़रमाया:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** इस्लाम आग़ाज़ में अजनबी था और अनकरीब दोबारा अजनबी हो जाएगा। और इन दो मस्जिदों (मस्जिदुल हराम और मस्जिद-ए-नबवी ﷺ) के दरमियान इस तरह वापस आ जाएगा जैसे साँप (बचाव के लिये)अपने बिल में वापस आ जाता है"। (सहीह मुस्लिम, "किताबुल ईमान" हदीस न0 373)
[صحيح مُسلم "كتابُ الايمان" حديث نمبر373]

नोट : اللہ ﷻ की अपने महबूब सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ को दी गई गैबी ख़बर के ऐन मुताबिक़ 1925 हि0 में(सलफ़ी तहरीक) की कामयाबी के नतीजे में जब हरमैन शरीफ़ैन की ख़िदमत अहले तौहीद के पास आई तो उलेमा-ए-अ़रब के कहने पर मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ के कब्रिस्तानों में बनाए गए 600 साल पुराने मज़ारात को गिराकर रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक शरीअ़त का निफ़ाज़ किया गया। जिसका मन्ज़र कच्ची क़ब्रों की सूरत में आज भी हर हज व उमरा करने वाला मुसलमान ख़ुद देख सकता है।अल्बत्ता(गुम्बदे ख़िज़रा)को हुजरा-ए-आयशा رضی اللہ عنہا की मुबारक छत से नहीं उतारा गया बिल्कुल वैसे ही जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इख़्तलाफ़ के डर की बाईस(वजह से)﴾हतीम﴿को शामिल काबा नहीं किया था चुनाँचे सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया:

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "ऐ आयशा! अगर तुम्हारी कौम ने नई नई जाहिलियत ना छोड़ी होती और मुझे यह ख़तरा ना होता कि उनके दिल (इस्लाम से) फिर जाऐंगे तो मैं (ज़माना-ए-जाहिलिय्यत की तामीर गिरा कर सय्यिदना इब्राहीम علیہ السلام की तरह) (हतीम) को ख़ाना-ए-काबा में शामिल कर देता"।

(सहीह बुख़ारी "किताबुल हज"हदीस न0 1584, सहीह मुस्लिम, "किताबुल हज"हदीस न0 3249) [صحيح بُخارى "كتابُ الحج" حديث نمبر 1584 ، صحيح مُسلم "كتابُ الحج" حديث نمبر 3249]

"कब्रिस्तान" जाने का हुक्म और मक्सद

मुन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी)तहरीर पढ़ने के बाद आप के दिल में यह ख़्याल आ रहा होगा कि अगर क़ब्रों का फ़ित्ना इतना ख़तरनाक है तो आख़िर रसूलुल्लाह ﷺ ने कब्रों पर जाने से रोक क्यों नहीं दिया.....?मेरे मुसलमान भाइयों! आप बिल्कुल सही सोच रहे हैं क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने भी इसी वजह से पहले तो क़ब्रों पर जाने से ही रोक दिया और फिर बाद में उसकी मशरुत (शर्तों के साथ) इजाज़त दी और साथ ही साथ क़ब्रों पर जाने का शरई मक्सद और वहाँ की दुआ भी वाज़ेह अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमा दी चुनाँचे मुस्नद राजहे ज़ैल (इसके मुताल्लिक) 3. सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाएँ।

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मैं तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया करता था। अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो क्योंकि वह दुनिया से बेरग़बती पैदा करती है। और मौत व आख़िरत की याद दिलाती है।"

(सहीह मुस्लिम "किताबुल जनाइज़"हदीस न0 2259) [صحيح مُسلم "كتابُ الجنائز" حديث نمبر2259]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना बरीदा رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ब्रिस्तान के लिये यह दुआ तालीम फ़रमाई:

﴾ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ نَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ ﴿ [صحيح مُسلم "كتابُ الجنائز" حديث نمبر2257]

(**तर्जुमा:** सलामती हो मौमिन और मुसलमान घर वालों तुम पर, और बेशक اللہ ﷻ ने चाहा तो हम भी तुम्हारे साथ मिलने वाले हैं, हम अपने और तुम्हारे लिये اللہ ﷻ से अ़फ़ियत का सवाल करते हैं।) (सहीह मुस्लिम "किताबुल जनाइज़"हदीस न0 2257)

❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं:" लाअनत फ़रमाई है रसूलुल्लाह ﷺ ने बहुत कसरत के साथ क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली औरतों पर। (जामे तिर्मिज़ी, "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 1056) [جا مع ترمذى "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 1056]

नोट : रसूलुल्लाह ﷺ ने औरतों को भी कभी-कभार क़ब्रिस्तान जाने की इज़ाज़त अता फ़रमाई मगर शरई हुदूद (पाबन्दियों) का ख़्याल रखते हुए:

(सहीह मुस्लिम "किताबुल जनाइज़" हदीस न0 2256) [صحيح مُسلم "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 2256]

"मज़ारात" के लिये सफ़र की मुमानिअ़त (मनाही)

जहाँ तक मज़ारात पर जाने का ताल्लुक़ है तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इस क़िस्म के तमाम सफ़र इख़्तियार करने से ही मना फ़रमा दिया चुनाँचे:

❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: "रख़्ते सफ़र ना बांधा जाए (इज़ाफ़ी सवाब की नियत से) सिवाय तीन मसाजिद के Ⅰ मस्ज़िदुल हराम, Ⅱ मस्जिदे नबवी, Ⅲ मस्जिदे अक़्सा।" (सहीह बुख़ारी "किताबुस्सलाहफिल मक्का वल मदीना" हदीस न0 1189, सहीह मुस्लिम, "किताबुल हज" हदीस न0 3384)

[صحيح بُخارى "كتابُ الصلوة فى المكه والمدينه" حديث نمبر 1189 ، صحيح مُسلم "كتابُ الحج" حديث نمبر 3384]

नोट : सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ जब मस्जिदे नबवी ﷺ में दाख़िल होते तो दो रकाअत नफ़िल पढ़ते और फिर रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र-ए-मुबारक पर हाज़िर होकर अर्ज़ करते: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ (**तर्जुमा:** सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ)

(मुसन्नफ़ लिइब्ने अबी शैबह "किताबुल जनाइज़"हदीस न0 11,793) [المُصنف لابن ابي شيبة "كتابُ الجنائز" حديث نمبر 11,793]

❷ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "मैं कोहे तूर पर गया तो मेरी मुलाक़ात वहाँ (साबिक़ा यहुदी आलिम) कअ़ब बिन अहबार رحمہ اللہ से हो गई। हम एक दिन इकटठे रहे, मैं उन्हे रसूलुल्लाह ﷺ की अहादीस सुनाता रहा और वह मुझे तौरात से कुछ सुनाते रहे.......फिर जब मैं वहाँ से वापस आया तो मेरी मुलाक़ात अबु बस्रा गफ्फारी رضی اللہ عنہ से हो गई तो उन्होंने मुझसे पूछा: कहाँ से आ रहे हो? मैंने कहा कि कोहे तूर से आ रहा हूँ। उन्होंने कहा:(ऐ अबु हुरैरह رضی اللہ عنہ)अगर तुम कोहे तूर पे जाने से पहले मुझे मिल लेते तो कभी वहाँ न जाते। मैंने पूछा वह क्यों? इस बात पर उन्होनें कहा कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "रख़्ते सफर ना बाँधा जाए (इज़ाफ़ी सवाब की नियत से) सिवाए 3 मसाजिद के: Ⅰ मस्ज़िदुल हराम, Ⅱ मस्जिदे नबवी ﷺ Ⅲ मस्जिदे अक़्सा।" ....(रसूलुल्लाह ﷺ की तंबीह भरी हदीस सुन कर सय्यिदना अबुहुरैरह رضی اللہ عنہ ने ख़ामोशी इख़्तयार कर ली।)

(सुनन नसई "किताबुल जुमआ"अहादीस न0 1430) [سُنن نسائى "كتابُ الجمعه" حديث نمبر1430]

नोट :कोहे तूर के नाम से कुरआन में पूरी सूरत मौजूद है। बल्कि اللہ ﷻ ने उसकी कसम भी ज़िक्र फ़रमाई है। मगर उस सहाबी رضی اللہ عنہ ने कोहे तूर पर जाने को भी रसूलुल्लाह ﷺ की नाफ़रमानी शुमार किया तो क्या वही सहाबी رضی اللہ عنہ रसूलुल्लाह ﷺ के फ़रामीन की 100 फ़ीसद मुख़ालफ़त में बनाए गए मज़ारात पर हमें हाज़िरी देने की इजाज़त देंगे?.......﴾फ़ैसला आप के हाथ में है.....!﴿

हयातुन्नबी ﷺ का मसअ़ला 100 फीसद बरज़ख़ी है

اللہ ﷻ की राह में जान देने वाले शोहदा-ए-कराम رحمہ اللہ से मुताल्लिक़ इर्शाद होता है:

❶ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ [سورة آل عمران ، آيت نمبر 169]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और हर गिज़ मुर्दा ना समझना उनको जो लोग शहीद कर दिये जाएँ اللہ ﷻ की राह में, बल्कि वह तो जिन्दा हैं अपने रब के पास और उन्हें रिज़्क़ भी दिया जाता है।" (सूरहतुल आले इम्रान, आयत न0 169)

❷ وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾ [سورة البقره ، آیت نمبر 154]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “और मत कहो उनको मुर्दा जो लोग शहीद कर दिये जाएँ اللہ ﷻ की रह में, बल्कि वे तो जिन्दा हैं लेकिन तुम उनकी जिन्दगी का शऊर नहीं रखते।” (सूरहतुल बक़रह, आयत न0 154)

❸ ....وَمِن وَرَائِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾ (सूरहतुल मोमिनून, आयत न0 100) [سورة المؤمنون ، آیت نمبر 100]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “और इन (सब मरने वालों) के पीछे बर्ज़ख़ (यानी छुपा हुआ पर्दा) हाइल है (मौत से लेकर कयामत के) उठाए जाने वाले दिन तक।”

नोट : मुन्दर्जा बाला (ऊपर लिखी) आयात से शुहदा-ए-किराम رحمہ اللہ और अंबिया किराम علیہم السلام की बदरजा-ए-ऊला (ऊँचे दर्जे की) और बिलख़ुसूस इमामुल अंबिया अंबिया वल मुरसलीन ﷺ की (बर्जख़ी जिन्दगी) की आला तरीन ख़ुसूसियात का इल्म होता है और साथ ही साथ यह भी पता चलता है कि (बर्जख़ी जिन्दगी) का शऊर किसी इन्सान के बस की बात नहीं बल्कि उसका इल्म सिर्फ और सिर्फ اللہ ﷻ के साथ ख़ास है। शरीअ़त की इस्तलाह में ऐसी चीज़ो को ﴾मुतशाबिहात﴿ कहा जाता है और उनकी कैफ़ियत में पड़ना सरासर गुमराही और फ़ित्ने का बाइस है चुनाँचे اللہ ﷻ ने ﴾मुतशाबिहात﴿ से मुताल्लिक़ वाजेह तौर पर इर्शाद फ़रमाया:

❹ ....فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۗ
وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ○ [سورة آل عمران ، آیت نمبر 7]

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “पस जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन होता है तो वह ﴾मुतशाबिहात﴿ (जिनका शऊर नहीं दिया गया है) के पीछे लग जाते हैं ताकि उनसे फ़ित्ना तलाश करें और मुरादे असली का पता लगाऐं, हालाँकि उनकी हक़ीक़त सिवाय اللہ ﷻ के कोई नहीं जानता। और जो लोग इल्म में पुख़्ता हैं वह तो यही कहते हैं कि हम तो इन तमाम आयात पर ईमान लाते हैं (बग़ैर किसी कैफ़ियत में पड़े) यह तमाम आयात हमारे रब की तरफ़ से हैं, और नसीहत तो नहीं हासिल करते मगर सिर्फ़ वह जो अक़्लमन्द है।” (सूरह आले इम्रान आयत न0 7)

“हयातुन्नबी ﷺ का मसअला” और गुस्ताख़ाना वाक़िआत:

अफ़सोस! बआज़ लोगों को शैतान ने वहीह (क़ुरआन और उसकी तफ़्सीर यानी सहीह अहादीस) की सच्ची तालीमात के बरअक्स (ख़िलाफ़) (मुतशाबिहात) के पीछे लगाते हुए गुस्ताख़ाना वाक़िआत उम्मत में फैला कर गुमराही का दरवाज़ा खोल दिया है। इसी ज़िम्न में एक (गुस्ताख़ाना झूठा वाक़िआ) मुलाहिज़ा फ़रमाऐं: “सय्यिद अहमद रिफ़ाही मशहूर अकाबिरे सूफ़िया में से एक हैं उनका किस्सा मशहूर है कि जब 555 हि0 में हज से फ़ारिग़ होकर वह क़ब्र-ए-रसूल ﷺ के मुक़ाबिल खड़े हुए तो दो अरबी के अशआर पढ़े......

✪ **उर्दू में तर्जुमा:** “दूरी की हालत में अपनी रुह को आस्ताना-अक़्दस पर भेजा करता था, वह मेरी नाइब बन कर आस्ताना-अक़्दस चूमती थी। अब जिस्मों की हाज़िरी की बारी आई है तो अपना हाथ मुबारक अता फरमाएं। ताकि मेरे होंट उसको चूमें।” इस पर कब्र-ए-शरीफ़ से हाथ मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसको चूमा। कहा जाता है कि उस वक़्त 90 हज़ार का मजमा मस्जिदे नबवी ﷺ में मौजूद था जिन्होंने इस वाक़िए को देखा जिन में शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رحمتہ اللہ علیہ का नाम नामी भी ज़िक्र किया जाता है।” (देवबंदी मौलाना शैख़ ज़करिया सहारनपुरी “फ़ज़ाइले हज” वाक़िअ 12 सफ़्हा 166, बरेल्वी मौलाना मुहम्मद इलयास क़ादरी “फ़ैज़ाने सुन्नत” मुसाफ़हा व मुअ़नक़ा की सुन्नतें सफ़्हा 654)

[دیو بندی : مولانا شیخ ذکریا سہارنپوری "فضائل حج " واقعہ 12 صفحہ 166 ، بریلوی : مولانا محمد الیاس قادری "فیضان سنت "مصافحہ و معانقہ کی سُنّتیں صفحہ 654]

नोट : सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात के बाद 47 साल तक कब्र-ए-मुबारक वाले हुज़्रे में रहीं मगर आप ने कभी भी रसूलुल्लाह ﷺ की ﴾बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी﴿ में आप ﷺ से कब्र-ए-मुबारक पर मुलाक़ात नहीं की हत्ता कि जब आप رضی اللہ عنہا ने इज्तिहादी ग़लती के बाईस(बाद) सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ से जंग का फैसला किया तब भी रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ मुबारक बाहर नहीं निकाला।

"हयातुन्नबी ﷺ का मसअला" और सहाबा किराम رضی اللہ عنہم का अक़ीदा

तमाम मख़्लुकात से आला ﴾बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी﴿ सय्यिदना सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ को हासिल है मगर सहाबा किराम علیہم الرضوان जिन्होंने ख़ुद अपनी आँखों से रसूलुल्लाह ﷺ की दुनियवी ज़िन्दगी में हज़ारों हिस्सी मौजज़ात देखे थे। आप ﷺ की वफ़ात के बाद कभी ये जुर्रत नहीं की कि ﴾बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी﴿ को आप ﷺ की ﴾दुनियवी ज़िन्दगी﴿ पर क़यास करते हुए आप ﷺ की कब्र-ए-मुबारक पर जाकर कोई मोजज़ा तलब करें क्योंकि वह जानते थे कि ऐसी हरकत करना गुस्ताख़ी है। चुनाँचे:

✪ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं: “सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ के ज़माने में जब लोग कहतसाली का शिकार हो जाते तो आप رضی اللہ عنہ सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के वसीले से बारिश की दुआ करते और यूँ अर्ज़ करते: “ऐ اللہ ﷻ बेशक पहले हम अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और (उनकी दुआ की बरकत से) तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। (आप ﷺ की वफ़ात के बाद) अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर ले कर आए हैं। पस (उनकी दुआ की बर्कत से) हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा।(सय्यिदना अनस رضی اللہ عنہ रिवायत फ़रमाते हैं) यूँ उन पर बारिश बरस पड़ती”।

(सहीह बुख़ारी “किताबुल इस्तिस्क़ा” हदीस न0 1010) [صحیح بُخاری "کتابُ الا ستسقاء " حدیث نمبر1010]

आख़री नसीहत

सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ ने नबी ﷺ की आला तरीन (बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी) के बावजूद क़ब्र पर जा कर आप ﷺ से दुआ नहीं करवाई बल्कि आप ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर ला कर उनसे दुआ करवाई और उम्मते मुहम्मदिया ﷺ को यह अक़ीदा समझा दिया कि (सही वसीला शख़्सी) दुनियावी ज़िन्दगी में मौजूद नेक आदमी से दुआ कराना है और इसी अ़क़ीदे पर उम्मत इज्माअ है। (अलहम्दु लिल्लाह)